An Introduction

Recollection of Saman Sangh

समुनस्सरण समण संघ

समण नागरिकता/सभ्यता	Saman Civilization
समण सभ्य/नगरवासी	Saman Citizen
समण संखार/संस्कृति	Saman Culture
समण धम्म/धर्म	Saman Dhamma
समण संत/साधु	Saman Sants
समण भासा	Saman Language
समण लिपि	Saman Script
समण भवन	Saman Architecture
समण मान्यता	Saman Faith
समण विनय	Saman Verses
समण संविधान/संविधाण	Saman Constitution
समण देव /देवता	Saman Muscular Feeder
समण देवा/देवी	Saman Faminine Feeder
समण राजा	Saman Kings
समण राज्य	Saman Kingdoms
समण चिकित्सक	Saman Doctors
समण व्यापारी	Saman Trades
समण अभियन्तृ	Saman Engineers
समण कस्सक	Saman Farmers
समण पसु पालक	Saman Shepherd
समण सेना	Saman Army
समण अधिकरणिक	Saman Judges
समण सिक्खक	Saman Teachers
समण सिक्खण साला	Saman Universities
समण उस्सव	Saman Festivals
समण लोक गीत	Saman Lok Songs

समण संघ

एक परचिय

समण संगीतियों की झलकियां

समण संघ (एक परिचय)

अधिकार जो मिलने अभी आरम्भ ही हुए थे, वे अब लगभग ख़त्म हो चले हैं। आने वाला समय बहुत ही भयंकर हैं। आरक्षण हैं पर नौकरियाँ नहीं है। सरकारी संस्थाएँ ख़त्म हो चुकी हैं। बिक चुकी हैं। शिक्षा इतनी महंगी हो चुकी है कि रोज़गार की शिक्षा दिलवाना लगभग असंभव हो चुका है। कोई पढ़ भी गया तो नौकरी कहाँ करेगा? सभी प्राइवेट संस्थान जात देख कर काम देते है। व्यापार जात के आधार पर छोटे शहरों में नहीं चल पाता हैं। राजनीति हजार टुकड़ों में टूटी हुई पड़ी हैं। धम्म के धम्मधर अलग अलग मठ बना रहे हैं। इसीलिए बुद्ध देशों से भी मदद नहीं मिल पा रही हैं। विदेश में भी लोग टुकड़ों में टूटे पड़े हैं। विदेश में बसे समण लोगों से भी मदद की कोई उम्मीद नहीं हैं। सामाजिक संगठन लाखों में है। ये लाखों संगठन खुद अपने आप को ही नहीं बचा पा रहे हैं। हर साल ये संगठन खुद ही टूट जाते हैं। फैक्ट्री, खेत हमारे पास है नहीं। सारा काम अब मशीनें कर रही हैं। मनुस्स की आवश्यकता समाप्त की जा रही हैं। अनावश्यक मनुस्स अब ख़त्म किए जा रहे है।

यदि आपातकाल कोविड कोरोना जैसा समय फिर आ गया, तब सबसे ज्यादा मारे जाने वाले लोगों में, फिर समण लोग ही होंगे। काम ना मिलने के कारण, भूख से, लाचारी से, बेबसी से, बीमारी से, ग़रीबी से मरने वाले लोग अधिकतर समण ही होते हैं। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, दल-बल धरना प्रदर्शन, हड़ताल, वार्ता लगभग सभी प्रयोग हो चुके हैं। 29 लाख संगठन बना कर, चंदा इकट्ठा कर, ज़मीन जायदाद बनाकर, भवन, मठ, डेरा, आश्रम, विहार, सदन, स्कूल, कॉलेज यूनिवर्सिटी बना कर देखा गया है, पर सांविधानिक अधिकार बच नहीं पायें।

अंतिम प्रयोग होना अभी बाक़ी है, संघ का प्रयोग, पुरातन समण संघ का प्रयोग, जिन भी लोगों ने संघ का प्रयोग किया है, वे हमेशा सफल हुए है। आप वर्तमान में इसका उदाहरण देख सकते हैं, और अतीत में भी देख सकते है।

यह आपातकाल है। समय कम हैं। हमको इकट्ठा होना ही पड़ेगा। और कोई रास्ता नहीं है। आप चाहें या ना चाहें पर यही एक रास्ता बचा हैं। जितनी जल्दी इस रास्ते को पकड़ लेंगे, उतनी जल्दी मंजिल तक पहुँच जाएँगे।

समण का अर्थ होता है- वह मनुस्स जो सम हो। समता, समानता के नियमों को मानता हो। समता, समानता के नियमों पर जिन्दगी, परिवार, व्यापार व सामाजिक धार्मिक कार्य करता हो। जीवन के हर पल को समता व समानता से जीता हो।

संघ का अर्थ है- किसी व्यक्ति, वस्तु, नाम, स्थान का एक साथ इकट्ठा रहना, रखना या हो जाना। जैसे - समण लोक (लोग) इकट्ठा होते हैं, तो बनता है समणों का संघ। वमण लोक इकट्ठा होते हैं तो बनता है वमण संघ। राज्य इकट्ठे होते हैं, तो बनता है भारत गण राज्य संघ, संयुक्त राज्य अमेरिका, संयुक्त राज्य (UN)।

संघ को और भी नामों से जाना जाता है। जैसे - झुण्ड, गिरोह, वर्ग, टोली, दल, भीड़, समूह, संग आदि।

दुनिया में हजारों प्रकार की संस्कृत भाषा होती है। जो अलग - अलग नाम से जानी जाती है। संस्कृत का अर्थ है, संस्कार + कृत। जब किसी वस्तु, भाषा, स्थान या व्यक्ति का संस्कार किया जाता है, तब यह कहा जाता है कि यह व्यक्ति बड़ा संस्कारी है। इसके संस्कार बड़े अच्छे हैं या खराब हैं। इसके माता पिता ने इस बच्चे को अच्छे संस्कार दिये हैं। इसका अर्थ है कि बच्चा पहले अलग तरह से जीवन यापन कर रहा था। माता पिता ने उसे सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, व्यापारिक, रहन-सहन, भाषा, ज्ञान-विज्ञान, पाखण्ड, आडम्बर या किसी भी प्रकार की जानकारी, क्रिया कलापों को सिखाया है। इससे बच्चा अपने पहले वाले व्यवहार से बदल गया और माता पिता के सिखाये व्यवहार को अपना कर जीवन जी रहा है। इस बदलाव को ही संस्कार कहते हैं। जो बदल गया उसे संस्कारित कहते हैं। जो नया, बदला हुआ अपनाया, उसे संस्कृति और इस पूरी प्रक्रिया को संस्कृत कहा गया। इसका अर्थ है बदलाव का ही दूसरा नाम संस्कृत, Changed, Modified, सुधार, बिगाड़ आदि है।

स्थानों, शहरों के नाम भी बदलते रहते हैं, यानि संस्कारित होते रहते हैं। जब दो या दो से अधिक भाषा, बोलियां, बोलचाल के लोग, लम्बे समय तक साथ - साथ रहते हैं, तो उनकी बोलियों से मिल कर

एक नई बोली, भाषा, बोलचाल बन जाती है। यह प्राकृतिक नियम है। इसे संखर बोलचाल कहते है। संस्कर, संखर से बना सद्द है। यह प्राकृतिक रूप से जब होता है, तब यह बोली, भाषा चारों तरफ फैल जाती है। किन्तु यदि जान बूझ कर भाषा या बोली बदली जाये, तब वह बोलचाल की भासा या बोली कुछ लोगों तक रह ही जाती है।

पुरानी भाषा, पालि को बदलने के लिये उसमें कुछ जोड़ा गया और कुछ तोड़ा गया। संस्कारित किया गया, नाम भी रखा "संस्कृत"। पर लोगों ने अपनाया नहीं। क्योंकि बनायी हुई नई भाषा थी। इसलिये संस्कारित भाषा जिसका नाम ही संस्कृत रखा, लोगों की भाषा, आजतक नहीं बन पायी। जबकि बुद्ध की बातों को भी इस भाषा में बदला गया।

वहीं दूसरी ओर, अरबी भाषा का संस्कार हुआ। अरबी, फारसी और भारत की पुरानी भाषा पालि से मिलाकर लोग नई भाषा बोलने लगे। इस बदली हुई भाषा का नाम, संस्कारित भाषा का नाम, इस संस्कृत का नाम उर्दू रखा गया। जो आज भी पुराने महाभारत के पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान और आज के छोटे भारत में खूब बोली जाती है। इसका अर्थ है कि दुनिया में संस्कृत भाषा हजारों प्रकार की है। पालि और मध्य एशिया की भासा से मिलकर नई भासा बनी, जिसे हिन्दी नाम दिया गया।

समण सद्द का भी संस्कार किया गया। इस सद्द को तो जड़-मूल से ही बदला गया। समण का श्रमण किया गया और सद्द का शब्द किया गया। इनके अर्थ भी बदले गये। समण का अर्थ है- समता में मनुस्स और श्रमण का अर्थ है- श्रम करते रहने वाला मनुस्स।

आप यदि समण हैं, तो समता में रहते हुये आप राजा, सेनापति, व्यापारी, किसान, अभियन्ता, शिक्षक, गुरू, सिपाही, वैद्य, डॉक्टर, न्यायधीश आदि सब बन सकते हैं, जो कि आप थे भी। परन्तु श्रमण में बदलते ही आप केवल श्रमिक, श्रमजीवी, परिश्रम, आश्रमजीवी, श्रमदानी, श्रमिक वग्ग (वर्ग) ही बनेंगे। अनन्त तक सिर्फ श्रमिक, श्रमण पेशे वाले। ऐसे हजारों सद्दों का संस्कार किया गया है, जिन्होनें समणों को राजा से रंक बना दिया।

आपको जानकर हैरत होगी कि पुरानी भासा में श्र, क्ष, त्र, ज्ञ, श, ष, ऊ, ँ, ॅ, आधा 'र' (किसी भी प्रकार का मृ, म्र, र्म) विसर्ग :, हलन्त म्, औ, ऐ की दो मात्रा, ये सद्द हैं ही नहीं। ये बाद में जोड़े गये है और ळ, अं (निग्गहित), ये सद्द हटाये गये हैं।

समण सद्द, सुद्द सद्द है (समण शब्द, शुद्ध शब्द है)। आजकल समण को समन भी लिखा जाता है, बोला जाता है। ण= न का प्रयोग आज चलन में है। रण = रन, मरण = मरन, चरण = चरन, हिरण = हिरन, करण = करन, हरियाणा = हरियाना आदि।

सम, समा, समु, समो, समे, समू, सभी से आरम्भ, मध्य, अन्त होने वाले सैकड़ों शब्द मिल जायेंगे। ये सभी समण लोगों की विरासत, व्यवहार संखति का परिचय है।

समण संघ पुरातन है। इसकी जननी पकति (प्रकृति) है। पकति के अन्दर सभी जीव जन्तु संघ में रहते हैं। हम बन्दरों से विकसित हुये है। बन्दर झुण्ड में रहते हैं। आज भी बन्दर टोलियों में चलते हैं। यही संघ है। बन्दर से चिंपांजी से मनुस्स बन कर भी हमने संग-संग रहने के गुण को नहीं छोडा।

महाभारत (पाकिस्तान, बंग्लादेश, भूटान, अफगानिस्तान, ईरान का कुछ हिस्सा, नेपाल, वर्मा का कुछ हिस्सा, तिब्बत, चीन का कुछ हिस्सा, सीहल) का इतिहास बुद्ध, महावीर के समय से प्रमाणिक माना जाता है, बाकी राखी गढी, हथिन में खुदाई के परिणाम आ रहे हैं।

इस प्रमाणिक इतिहास के अनुसार, बुद्ध ने एक बार वज्जि समण संघ के सात अपरिहारिय नियम बताये थे। मैगस्थनीज की किताब 'इण्डिका' में सात प्रकार के समण बताये गये हैं। 'धम्मपद' दुनिया की सबसे ज्यादा बिकने वाली धम्मिक किताब है। उसमें समणा का बार बार जिक्र है।

बुद्ध और महावीर दोनों समकालीन थे और दोनों ही समण धम्म के सन्त थे। समण धम्म के सन्तों की भारत मे बाढ़ है। समण बुद्ध, समण महावीर, समन चोखा मेला, समण नामदेव, कबीर समण, रविदास समण, समण अछूतानन्द, समण अम्बेडकर, समण ज्योतिबा

समण संघ WE SAMAN SANGH

फुले, साहूजी समण, रमाई समण, सावित्री बाई फुले समण, झलकारी बाई समण, ललई सिंह यादव समण, गुरू हरिचांद ठाकुर समण, जगदेव प्रसाद समण, कर्पूरी ठाकुर समण, गुरूचांद ठाकुर समण, मातादीन समण, दीना भाना समण, काशीराम समण, जोगेंद्र नाथ मण्डल समण, रामदेव बाबा राजस्थान समण, दुर्बलनाथ समण, गरीब दास समण, गुरू घासीदास समण, गाडगे समण, विरसा मुण्डा समण, पेरियार समण, रामस्वरूप वर्मा समण, अयोधीदास समण, तुकाराम समण, ओशो समण, सम्राट असोक समण, चन्दगुत्त मोरया समण, शिवाजी महाराज समण, सम्भाजी महाराज समण, जीजा माता समण, बिम्बिसार समण, अजातसत्तु समण, जीवक समण, अनाथपिण्डक समण, यसोदरा समण, महामाया समण, पजापति गोतमी समण, लिंगायत लोग समण, भारत के 90% लोग (जिन्होंने अपना मत बदला) समण, भारत के 120,00,00,000 (एक सौ बीस करोड़ लोग) समण। सिद्दनाक भीमा कोरे गांव समण, सरदार पटेल समण, सिख सन्त समण, अरहत महादेव समण, उपाली नाई समण, सुणीत भंगी समण, जाति रखने वाले सारे भारतवासी समण (वमण, क्षत्रिय, वैश्य में जातियां नहीं होती है।) सभी सुद्द या शुद्ध या शुद्ध समण या शुद्र समण।

समण संघ सभी समणों के सुख, विकास व सुरक्षा को सुनिश्चित रखने के उद्देश्य को, पूर्व की भांति, पूरा करने के लिये कटिबद्ध है। समणों का सुख, विकास व सुरक्षा प्राप्त करना व प्राप्त करने के बाद बनायें रखना ही इसका पहला और अन्तिम उद्देश्य है।

समण संघ पुरातन पद्धति पर काम करता है। पुराना सिद्धान्त है- जो इकट्ठे रहते हैं, वो शोषण करते हैं, वो मारते हैं, वो सभी सुख सुविधा पाते हैं, वो आगे बढ़ते हैं, वो शिकार करते हैं, वो राजा बनते हैं, वो सभी कानून बनाते हैं। और जो इकट्ठा नहीं रहते हैं, वो शोषित होते हैं, वो मरते हैं, वो सभी दुख-दुविधा पाते हैं, वो पीछे रह जाते हैं, वो शिकार हो जाते हैं, वो गुलाम बनते हैं, वो कोई कानून नहीं बना सकते हैं।

समणों का पुरातन वाक्य है "संघे सत्ति युगे-युगे"

इसका अर्थ है "योग-योग से संघ में शक्ति", जोड़-जोड से संघ में शक्ति होती है। इस वाक्य के अनुसार संघ, सभी समणों को जोड़ता है।

जुडेंगे - जीतेंगे।
जो जुड़े हैं - वो जीते हैं।
जहां जुड़े हैं - वहां जीते हैं।
जब जुड़े है - तब जीते है।
आज जुड़ेंगे - आज जीतेंगे।
अभी जुड़ोगे - अभी जीतोगे।
पहले भी जुड़े थे - पहले भी जीते थे।
जिद्द जुड़ने की - जुडेंगे - जीतेंगे।।

समणों के संघ के बहुत से पुरातन नियम रहे हैं। जो संघ को मजबूती से बांध कर रखते थे। उनमें से दस नियम सुनहरे नियम के नाम से जाने जाते हैं। जो इस प्रकार हैं-

1. केवल समण
2. चन्दा कभी नहीं
3. जाति अभ्यास कभी नहीं
4. केवल संघवाद
5. पद, प्रतिष्ठा, मंच, माला कभी नहीं
6. पञ्जीकरण कभी नहीं
7. संघादिसेस सबसे ऊपर
8. संघ राजनीति में कभी नहीं जायेगा
9. संघ घातक की वापसी संघ में कभी नहीं
10. उपरोक्त 9 विनय संघ का आधार हैं, ये न कभी बदले जायेंगें, ना खत्म किए जायेगें और ना कभी अमान्य किए जायेगें।

इनको दस गोल्डन विनय के नाम से जाना जाता है।

पहला नियम है- समण संघ मे **केवल समण** ही रहेगें, समणों के अतिरिक्त अन्य किसी से कोई लेना देना नहीं है। समणों का संघ, समणों के द्वारा, समणों के लिए।

दूसरा नियम है- समण संघ **चन्दा कभी नहीं** लेता। समण संघी हर कार्य में खुद का खर्च, अपने ऊपर खुद ही करते हैं, सभी संघी अपना खर्चा स्वयं उठाते हैं।

तीसरा नियम है- समण संघ में कभी भी **जाति का अभ्यास नहीं** किया जायेगा। जातिवादी विचारधारा समण संघ में निषेध है।

चौथा नियम है- समण संघ में **केवल संघवाद** ही चलेगा। इसका अर्थ है कि समण संघ मे व्यक्तिवाद, परिवारवाद, राजावाद, रानीवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद, नस्लवाद, धर्मवाद, पैसावाद आदि या किसी भी अन्य वाद का कोई स्थान नहीं है। व्यक्तियों के चेहरों की मान्यता खत्म।

पाँचवां नियम है- संघ में **पद, प्रतिष्ठा, मंच, माला, कभी नहीं**। इसके अलावा गमछा, टोपी, साफा, साल, स्तुतिगान आदि कभी इस्तेमाल नहीं किये जायेंगे।

छठवां नियम है- समण संघ का **पञ्जीकरण कभी नहीं** होगा। इसका अर्थ है कि समण संघ का कोई भी व्यक्ति मालिक नहीं होगा। समण संघ का मालिक समण संघ ही होगा।

सातवां नियम है- संघादिसेस सबसे ऊपर है इसका अर्थ है कि संघ जो आदेश करेगा वह सबको, सबसे पहले मानना होगा। संघ जो बहुमत से निर्णय पास करता है वह संघ का आदेस बन जाता है। वह संघादिसेस सबको मानना होता है।

आठवां नियम है- समण **संघ राजनीति में कभी नहीं जायेगा**। इसका अर्थ है कि संघ राजनीति में नहीं जायेगा। यदि कोई समण संघी राजनीति में जाना चाहे तो जा सकता है। यह उस व्यक्ति की इच्छा है कि वह समण संघ से अनुमोदित होकर जाता है या बगैर अनुमोदन के जाता है। जो संघी राजनीति में जायेगा, उस के कुछ अधिकार चले जायेंगे। जो नियमानुसार है।

नौवां नियम है- संघ घातक की वापिसी संघ में कभी नहीं, इसका अर्थ कि संघ जो नियम बनाता है, वह सबसे ऊपर है। जो संघी संघ के नियम नहीं मानेगा, उस संघी पर संघ के अनुसार दण्डात्मक कार्यवाही होगी। जो संघी, संघघात में लिप्त पाया गया, उस का निकाला संघ से

यदि होता है, तो फिर उसकी कभी वापिसी समण संघ में नहीं होगी।

दसवां नियम है- समण संघ के **नौ नियम संघ का आधार है ये ना कभी बदले जायेंगे, ना खत्म किये जायेगे और ना कभी अमान्य किये जायेंगे**। इसका अर्थ है कि यह दसवां नियम समण संघ के नौ नियमों की गारंटी है।

इसके अतिरिक्त समण संघ प्रत्येक आवश्यकतानुसार हर महीने प्रस्ताव लगाकर बहुमत के अनुसार नये नियम भी बनाता है।

समण संघ और साधारण संगठनों में जमीन आसमान का अन्तर है। साधारण संगठनों की संख्या 29 लाख बताई जाती है, जिसमें से 4 लाख संगठन क्रियाशील हैं। क्रियाशील का अर्थ है कि ये सालभर लोगों से चन्दा लेते हैं और कार्यक्रम लागते हैं।

ये 29 लाख संगठन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, जातियों, सरकारी कर्मचारी, आर्थिक, दल-बल-आर्मी-फोर्स, सन्तों के आश्रम-मठ-डेरा-धर्मशाला के लिये है। इसका अर्थ है कि लाखों संगठन एक ही काम कर रहे हैं। लाखों सामाजिक संगठन, लाखों राजनीतिक संगठन, लाखों धार्मिक संगठन, लाखों सरकारी कर्मचारियों के संगठन। **सोचने वाली बात यह है कि ये संगठन इकट्ठे क्यों नहीं होते हैं?** इन संगठनो का क्या फायदा हुआ? ये संगठन आपस में एक दूसरे के दुश्मन क्यों हैं? ये सभी संगठन हमारे अधिकार बचा क्यों नहीं पा रहे हैं? ये संगठन हर साल टूट क्यों जाते हैं? ये संगठन किस के लिये काम कर रहे हैं? ये संगठन चन्दे का क्या करते हैं? आज तक ये 29 लाख संगठन एक भी अधिकार बचा क्यों नहीं पायें हैं? ये संगठन किसकी बात मानते हैं? क्या ये सभी संगठन किसी संघ से जुड़े हैं ? या हर संगठन आजाद घूम रहा है?

इन्हीं सब सवालों का जवाब है- हमारा संघ, समणों का संघ, समण संघ। संघ एक विचार पर चलता है। संघ में लोगों की चलती है। संघ के कभी टुकड़े नहीं होते हैं।

संगठन कभी जीतते नहीं हैं और संघ कभी हारते नहीं हैं। दुनिया में जो लोग अपने संघ में रहते हैं, वो मजे करते हैं।

समण नागरिकता व समण संखार (समण सभ्यता व समण संस्कृति)

पुराने समय में, नाग वंसी लोग जहां वास करते थे, वसन करते थे, उस जगह को नागर निगम कहते थे। जो बाद मे नगर और बस्ती के नाम से जाने गये। नागर उसे बोला जाता था जो निगम में रहता था। नागर = Urbane, Cityzen। जो लोग निगम में रहते थे, उन सब को, उनके सामूहिक काम, रहना, सहना को एक सामूहिक नाम से पुकारा गया, नागरिकता। नागरिकता = Civilization = सभ्यता।

आज हम नागरिकता को Citizenship कहते हैं। नागर = नागरिक = Citizen = सभ्य। नागरिकता = Civilization = सभ्यता। निगम = वस्ती = वसति = शहर = City।

वंस का अर्थ है बाँस, Bamboo, जैसे बांस की कोंपल एक में से दूसरी फूटती जाती है। उसी प्रकार जीवों में एक जीव से दूसरा जीव पैदा होता चला जाता है। इसीलिये वंसज, वंसावली, वेसिक, वंसागत, अनुवांशिक बोला जाता है। वंस से ही वसति, वसनक, वसन सद्द बने हैं।

नाग लोग भी समण थे। उनकी नागरिकता को समण नागरिकता कहते हैं या समण सभ्यता। आपने कई मरी हुई समण सभ्यताओं के नाम सुने होगें जैसे- हड़प्पा, मोहनजोदाडो, राखीगढी, हथीन, अग्गोहा आदि। जहां इस विसाल समण सभ्यता में सभी समान थे। सम लोगों की सभ्यता / नागरिकता। सम से बहुत सारी उत्पत्ति हुई। इस समण सभ्यता में सम से सैकड़ों सद्द बने, जैसे- समक, सम-बन्धन / समीध, समग्ग-समग्र, समचरिया, समूह, समाज, समझ, समण समणी, समणों, समण-धम्म, समण-संखार (समण संस्कृति), समता, समानता (समत्त=समतत्व), समत्त, समाधि, समारोह।

नागरिकता (सभ्यता) और संखार (संस्कृति) दोनों अलग-अलग अर्थ रखते हैं। जहां नागरिकता मनुस्सों के रहन, सहन, काम, भासा, जमीन, मकान, सड़क, निगम, देस से सम्बन्धित हैं, वही संखार (संस्कृति) मनुस्स के आन्तरिक व्यवहार में बदलाव से सम्बन्धित है।

किसी मनुस्स में जो व्यवहार उत्पन्न होता है, वह संखार के कारण होता है। किसी के संखार (संस्कार, संस्कृति) में बदलाव पर हम कहते हैं- ये इसके सुसंस्कार हैं। यदि उसके बदलाव हमारे लिये अनुकूल हैं और यदि उसके बदलाव हमारे लिये खराब हैं, तो हम कहते हैं- इसके संखार (संस्कार-संस्कृति) खराब हैं। समण सभ्यता व समण संखार (संस्कृति) पर हजारों किताबें लिखी जा सकती हैं।

बुद्ध और डॉ0 अम्बेडकर का सब कुछ समण सभ्यता- समण नागरिकता व समण संखार - समण संस्कृति पर ही आधारित है।

इन समण सभ्यताओं के अवसेस मिले हैं। पर समणों की जीवित सभ्यता दुनिया की विसाल सभ्यता है। समणों की विसाल सभ्यता / नागरिकता के आरम्भ में कोई GOD नहीं था। ना कोई काल्पनिक चमत्कार था। ना कोई धर्म था। ना कोई जाति थी। ना कोई संस्कारित भासा जैसे - हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, हिंग्लिश थी।

इस विसाल सभ्यता में कोई भी मनुस्स याचक, मंगता, भिखारी, बिना काम का खाने वाला, आडम्बर - पाखण्ड फैलाने वाला नहीं था। देने वाले को देवता, देने वाली को देवी बोला जाता था - नदी पानी देती है तो देवी, पहाड़ बर्फ देता है तो देवता आदि।

♦ ♦ ♦

अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट देखें, YOUTUBE देखें, FACEBOOK देखें, TWITER देखें। समण सेवा केन्द्रों पर विजिट करें। घर बैठे डाक द्वारा समण गंथ मंगवाइये। डेल्टा प्लस हिन्दी पाक्षिक अखबार मंगवाइये। जूम पर विचार दें - विचार लें, तर्क विर्तक करें, रोजाना रात 8 बजे से 11 बजे तक जो पिछले दो साल से बिना नागा के चल रही है। संगीतियों / सम्मेलनों में भाग लें। निम्नलिखित फोन नम्बरों में से अपने नजदीकी नम्बर पर सम्पर्क करें-

♦ **दिल्ली** : आर. के. बौद्ध- **9540002798**, तिलकराज सिंह- **9310352765**, पवन मूलनिवासी- **9818548898**, आर. एस. गिल- **9971276565**, एड़. अभिषेक राज सिंह- **9990444634**, नरेश सहाय- **9871813444**, हरीश कुमार- **8506863300**, वेदप्रकाश- **9911108679**, बौद्धाचार्य गंगा सागर- **9968268897**, धनवंती दास

समण- 9999078199, तनुजा- 9643286068, कमल किशोर गौतम- 9899234590

◆ **महाराष्ट्र :** रमेश नामदेव कटके (अमरावती)- 8652131301, राजेश काम्बले (मुम्बई)- 8452945679, हरीश भगत (नागपुर)- 9881120189, आशीष धम्मदर्शी (यवतमाल)- 9421775297, संजय वानखेडे (औरंगाबाद)- 9421325506, ज्योति कोल्हे (परवनी)- 9545637989, सुधा मोहिले (मुम्बई)- 8108476087, अशोक पगारे (नासिक)- 8488946427

◆ **उत्तर प्रदेश :** डॉ. रमेश चन्द्रा (लखनऊ)- 9415010244, डॉ. वीरेन्द्र सिंह (कानपुर)- 7565899424, एस.आर.बौद्ध (कानपुर)- 9839765602, जगराम सिंह (लखनऊ)- 9452180244, आर. जी. कुरील (उन्नाव)- 7355276673, डॉ. स्वामी (लखनऊ)- 9519757770, अतेन्द्र कुमार (फर्रूखाबाद)- 8188930424, अनिता बौद्ध (बरेली)- 7310890172, वेद प्रकाश (बिजनौर)- 947017879865, जे. पी. सिंह अम्बेडकर (रामपुर)- 8755555521, ए. के. सिंह (संभल)- 9456032098, प्रकाश सिंह (मुरादाबाद)- 9719405577, लखपत सिंह (मुरादाबाद)- 9457124628, निर्देश सिंह (अमरोहा)- 9149327341, योगेन्द्र सिंह (हापुड़)- 8445435784, टीकाराम प्रेमी (मेरठ)- 9012683241, एड़. अनन्त चौरसिया (लखनऊ)- 9415531970 अनीताराज सिंह (बुलन्दशहर)- 9756703167, चरन सिंह (गाजियाबाद)- 9759609714, सुरेश चन्द (गौतमबुद्धनगर)- 9650999926, डॉ. आर. बी. बरूण (आगरा)- 9458766997, मनोरमा (आगरा)- 9412415092, सतेन्द्र मोहन (मुरादाबाद)- 6395046671, सी.पी.सल्लियानी (अलीगढ़)- 9457390808, प्रीतम सिंह (फिरोजाबाद)- 8126520627, मदनपाल (मुरादनगर)- 9211325784, सूर्य कुमार (लखीमपुर खीरी)- 7351275619, डॉ. धर्म सिंह (अमरोहा)- 8445778305, संजय बौद्ध (मथुरा)- 9927439239, बनी सिंह (गाजियाबाद)- 9868084428, रामलोचन (सोनभद्र)- 9793219851, योगेन्द्र सिंह (डिबाई)- 9627718826, आशाराम (झांसी)- 9920264907, भन्ते डॉ. उदयनशील (इटावा)-

9760935331, देवेन्द्र बौद्ध (मथुरा)- 9911086581, राकेश प्रजापति (मुजफ्फरनगर)- 8787277684, उमेश कुमार (सहारनपुर)- 9412668263, सन्तोष शाक्य (बरेली)- 9045370648, एड़. विशाल भारती (धामपुर)- 8958122202, रामकुमार (लखीमपुर खीरी)- 9795298097, बाबूराम जयंत (शामली)- 9411643319, डॉ. मौजीलाल (हरदोई)- 9451530852, मथुरा प्रसाद भारती (बाराबंकी)- 9792000276, नादान सिंह (रायबरेली)- 8094942043, नरेश कुमार (सीतापुर)- 9582765525, एड़. सन्तोष सिंह (लखनऊ)- 7565054394, डॉ. एस. के. उमराव (लखनऊ)- 9415103096, हरिराज सिंह केसरी (बिजनौर)- 94123 86385, प्रियंका बौद्ध (हरदोई)- 7007432978, राधेश्याम (पीलीभीत)- 8210279118, प्रमोद कुमार (लखीमपुर खीरी)- 7080896576, गणेश गौतम (पीलीभीत)- 8423590476, बसंत लाल (फिरोजाबाद)- 9411965342, बंटी कुमार गौतम (खुर्जा)- 9557201493, कुर्वा सिंह (बिजनौर)- 9870626659, चरनसिंह (मुरादनगर)- 9759609714

◆ **हरियाणा :** गीता गोरिया (गुरूग्राम)- 9654795632, अर्चना गौतम (गुरूग्राम)- 9911508271, राजकुमार (धारूहेड़ा)- 9928021890, देवीलाल (यमुनानगर)- 9466655619, दीपक कुमार (कुरूक्षेत्र)- 8572894685, राजेश धानिया (बहादुरगढ़)- 9416024167, ओ.पी.परिहार (हिसार)- 8558818877, जे. पी. एस. बौद्ध (हिसार)- 9253137230, चन्दर मोहन (कैथल)- 9416383360, सुरेश सबरवाल (हिसार)- 9416136542, उदयभान (कुरूक्षेत्र)- 9466543715, एड़. प्रेम माथुर (फरीदाबाद)- 9718560744, गुलशन कुमार (झज्जर)- 9812829810, एस. पी. परिहार (हिसार)- 8059551160, अजीत सिंह (रेवाड़ी)- 9599365798, हंसराज बौद्ध (सिरसा)- 9416309467, कृष्णा ग्रोवर (जीन्द)- 9896197290, जयवन्ती (सोनीपत)- 9996339934, ओमप्रकाश (फतेहाबाद)- 9466058990,

◆ **राजस्थान :** उमराव लाल वर्मा (जयपुर)- 9829101736, जगदीश

प्रसाद बौद्ध (अलवर)- 9414333171, द्वारका प्रसाद (जयपुर)- 9468586397, शंकर लाल बौद्ध (अलवर)- 9414906450, सुरेश जाटोलिया (बाड़मेर)- 9610288189, मोतीलाल मंजुल (कोटा) 9024704524, एम. के. भारतीय (झालावाड़)- 7691006731, प्रहलाद सिंह (भरतपुर)- 9418893295, केसराराम (बीकानेर)- 9529120306, घीसा सिंह (भीलवाड़ा)- 9982121283, डालचन्द (डीडवाना नागौर)- 8285835262, जगदीश प्रसाद मौर्य (सीकर)- 9783775696, नीता जौनवाल (जयपुर)- 9414451891, प्रकाश बौद्ध (बीकानेर) 7627030623

♦ **पंजाब :** गुरूप्रसाद- 9463245715, बिजेन्द्र सिंह- 9417001717, बलकार सिंह- 9780062539, धनीराम (भटिंडा)- 9878000199

♦ **चंड़ीगढ़ :** मनोज कुमार- 9464087012

♦ **मध्यप्रदेश :** सचेन्द्र बौद्ध (दतिया)- 8889210821, धर्मेन्द्र सिंह (पन्ना)- 9424383245, आर. ए. मित्तल (ग्वालियर)- 9425776194, सुरेश बौद्ध (मलाचखण्ड)- 9669315070, दिनेश पटेल (जबलपुर)- 8770804226, रमेश चंद्रा (इन्दौर) 9165166000, डॉ. बिकास चन्द बिस्वास (उज्जैन)- 9981414194

♦ **उत्तराखण्ड :** त्रिवेन्द्रम (काशीपुर)- 9897082327, राकेश कुमार (काशीपुर)- 9756253394, दिलीप कुमार (हरिद्वार)- 9720813784, अशोक लाल सिद्धार्थ (सितारगंज)- 9927498777

♦ **प0 बंगाल :** ब्योमकेश विश्बास- 8285332533, रण सिंह- 9990216728, बृजनन्दन बैंडल- 9123675719, पंकज बैरागी (नोडिया)- 9599122974, दिबाकर बिस्वास (दक्षिण 24 परगना)- 9717063163, गोपाल कृष्ण विश्वास (उत्तरी 24 परगना)- 9674552491, नारायण चंद्र मंडल (उत्तरी 24 परगना), 7838141969, मनोज मिस्त्री (कोलकाता) 8910838195, प्रशान्त कुमार बिश्बास (कोलकाता)- 8910991966, प्रकाश कुमार पुरूलिया (पर.वगांल)- 9749440496

♦ **झारखण्ड :** अविनाश कुमार- 7209589577, संजय कुमार- 7483376704,

♦ **बिहार :** मुन्ना कुमार सिंह- 7677265480, राजकिशोर (मधुबनी)- 8521090911

♦ **गुजरात :** अरविन्द परमार (वडोदरा)- 9998573532, किशोर पगारे (वडोदरा)- 9099403322, रतिलाल देसाई (वडोदरा)- 9426352221, एड़वोकेट रामचन्द्रा (वडोदरा)- 9426054360, डॉ. रंजना वांडकर (भावनगर)- 9574816166, सी. एल. समण (सूरत)- 8734014732, अवधेश कुमार प्रसाद (अहमदाबाद)- 9428518367, जे. के. सुतारिया (भरूच़)- 7600029266, बिजेन्द्र सिंह (सूरत)- 9724099486, एम. वी. काम्बले (वडोदरा)- 7433835275,

♦ **छत्तीसगढ़ :** गुरूचरन रत्नाकर (पेन्ड्रामरवाही)- 9893292323, ओमप्रकाश चौधरी (रायपुर)- 9473691725, रामचरित जैसवार (दुर्ग)- 9981924946, राजेन्द्र रंजन गायकवाड (अम्बिकापुर)- 9425256196, बी. चौधरी (रायपुर)- 9752445661, सतरूपा सोनोले (बलौड़ा बाजार)- 8827121949

♦ **आन्ध प्रदेश :** एड़. राष्ट्रपाल- 9318066666

♦ **हिमाचल प्रदेश :** हेमराज सिमर- 9805868312, विमल कुमार- 8199875044

♦ **तेलंगाना :** एम शंकर राव- 9550950038, भीमसेन- 9849435454

♦ **कर्नाटक :** अनुरंजन सिंह- 9910450115

♦ **जम्मूऔरकश्मीर :** शशि स्याल- 7006561115, रामेश्वर- 9549860341

♦ **तमिलनाडु :** एम कुमार- 9094098409

♦ **केरल :** संजय लोनिया- 8921825319

♦ **कनाडा :** राजकुमार ओशोराज +1(416)2194196, हिमिका परिहार +1(647)9214144

♦ **अमेरिका :** डॉ. अजय जलवान +1(347)5172355, रवि माहे (न्यूयॉर्क) +1(860)3836191, डॉ दलीप मसके +1(201)3125599, सम्यक कटके +1(562)3148105, डॉ. सुदीप इंगोले 9167266091

♦ **यूके :** एच. एल. विर्दी- +442085752348, गौतम चक्रवर्ती- 9879544633,

समण सेवा केन्द्रों पर जाएं या सम्पर्क करें -

♦ समण सेवा केन्द्र, प्रथम तल, कैलसा बाईपास रोड़, छेवड़ा, अमरोहा - 244221 (उ.प्र.)। मो. - 9997985869, 8755406801

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा आर. के. बौद्ध, RZG - 698, राजनगर - II, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली -110045 मो. 9540002798

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा दीपक कुमार, वार्ड नम्बर- 25, ज्योतिबा फुले मार्ग, चनार्थल, नियर ब्रह्मानंद स्कूल, कुरूक्षेत्र- 136118 (हरियाणा) मो. - 8572894685

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा गुलशन पुत्र लखीराम, H. N. 391, वार्ड नम्बर 2, अम्बेडकर चौक, पुराना बस स्टैंड, झज्जर- 124103 (हरियाणा) मो.- 9812829810

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा डॉ0 आर. बी. वरूण, BN 153, पंच मुखी हनुमान मंदिर के पास, लाल कुर्ते, अवतार सिंह मार्ग, आगरा केन्ट, आगरा-282001 (उ. प्र.) मो.- 9458766997

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा ओम प्रकाश परिहार, H. N. 123, सेक्टर 13, हिसार- 125005 (हरियाणा) मो.- 8558818877, 8059551160

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा गुरू प्रसाद, 573 / 1, दशमेश नगर, हमबरान रोड, अयाली खुर्द, लुधियाना- 142027 (पंजाब) मो.-9463245715

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा सरिता सिंह, वार्ड नम्बर - 13, इन्दिरा नगर, टीचर कॉलोनी, गढ़मुक्तेश्वर, हापुड, (उ. प्र.) - 245205 मो.- 8445435784, 7060392919

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा आर. बी. काम्बले, H. N. 334, कुर्ली, वीटा, सान्गली- 415311 (महाराष्ट्र) मो.- 922029009

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा मनोरमा बौद्ध, 27-विश्वकर्मा ग्रीन, निकट डॉ. मारिया स्कूल, पश्चिमपुरी, सिकन्दरा, आगरा-282007 (उ.प्र.) मो.- 9412415092

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा रमेश नामदेव कटके धम्मपद, बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर कॉलेज रोड़, उत्तमनगर, अमरावती-444606 (महाराष्ट्र)। मो.- 8652131301

♦ समण सेवा केन्द्र, क्रांति नगर, बाग लकुला, खुशी माँ गारमेंट्स, मैसेनी रोड़, फर्रूखाबाद-209625 (उ.प्र.) मोबा. 8604141384

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा अभिषेक राज, 201, गंगोत्री अपार्टमैंट, विकासपुरी, दिल्ली मो.- 9990444634

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा शिव कुमार बौद्ध, बी-98, अम्बेडकर कालोनी, छतरपुर, दिल्ली मो.- 9810652832

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा नवाब सिंह, केजी-I/595, विकासपुरी, दिल्ली मो.- 9868543535

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा आर. एन. प्रसाद, एफ-50, मोती बाग-I, दिल्ली

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा कमल किशोर गौतम, 49/A/I, मोहम्मदपुर, दिल्ली मो.- 8860817315

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा शम्भुदयाल बौद्ध, 286, मैदानगढ़ी, दिल्ली, मो.- 9289323419

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा अर्चना गौतम, 200/5 P-6 गुरूग्राम (हरियाणा) मो.- 991150824

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा तनुजा, 215, पॉकेट-II पश्चिम पुरी, दिल्ली, मो.- 9643286068

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा अजय सम्राट दक्षिणपुरी पुल, प्रहलादपुर, दिल्ली मो.- 7982694083

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा सुरेश चन्द, दादरी, गौतमबुद्धनगर (उ.प्र.) मो.- 9650999926

♦ समण सेवा केन्द्र, शहीद उधमसिंह कालोनी, मुरादनगर, जिला-गाजियाबाद, (उ.प्र.)-201206 मो.-9759609714

♦ समण सेवा केन्द्र द्वारा संजय सिंह बौद्ध, ग्राम जरैलिया, पोस्ट-हसनपुर, तहसील- मॉट, जिला- मथुरा (उ.प्र.) मो.-9927439239

विशेष :अनेक समणसंघियों के नाम, नम्बर और समण सेवा केन्द्र स्थानाभाव के कारण छूट गये हैं। उन्हें अगले संस्करण में शामिल किया जायेगा।

समण संगीतियों की झलकियां

समण संघ की अधिक जानकारी के लिए इन QR कोड़ को स्कैन करके इन लिंक पर जाएं

Daily Zoom Meeting

wtpsamansangh.com

samansangh.com

@SamanSangh

@TeamTwentyTwo

@Seeeansh

wethepeopleofindiawe

Ganparishad

BuddhishtPeopleOfPlanetEarth

@samansangha

@samanculture

@wethepeoplesamansangh1622

Published By : SAMAN PUBLICATION, AMROHA-244221 Mob.: 8755406801